॥ श्री सद्गुरवे नमः ॥

वर्ष १०, अंक १०　　जुलाई　　श्रावण १९९३

भक्ति

श्री गुरु परमानन्दं वन्दे स्वानन्दविग्रहम् ।
यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

सम्पादक—
म० कृष्णानन्द, दुर्गादत्त

वार्षिक चन्दा २)

सूचना।

प्रिय पाठक गण,

हमें अत्यन्त शोक है कि हमारे गुरुदेव परम पूज्य श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज ६ जुलाई १९३६ को ८ बजे सायंकाल शिमले में हमारे दुर्भाग्य से परमधाम को पधार गये।

परम पूज्य श्री महाराज जी की असीम कृपा से ही अब तक समस्त आश्रम तथा भक्ति का कार्य इस प्रकार चल रहा था कि हम लोगों पर इसका तनिक भी बोझा नहीं था। अब उनके इस अकाल वियोग से एक बार ही समस्त कार्यभार हम पर आ पड़ा है। हम मोह को प्राप्त हो रहे हैं और शोकवश अभी किसी भी काम के लिए समर्थ नहीं हैं। आशा है कि पाठक गण इस महान् आपत्ति काल में हमारे प्रति सहानुभूति रक्खेंगे और हमारी विवशता को क्षमा करेंगे। श्री परम पूज्य महाराज जी की परम पुनीत स्मृति में अगले मास आपकी सेवा में 'वियोगाङ्क' नाम से भक्ति का एक छोटा सा विशेषांक समर्पित करेंगे। इस अंक को जैसा कि हम चाहते थे वैसा तो इन कष्ट के दिनों में नहीं निकाल सकेंगे परन्तु फिर भी यथासाध्य इसको सफल बनाने का उद्योग किया जायगा। आशा है पाठकों को उसके पढ़ने से श्री पूज्य महाराज जी के जीवन तथा उपदेशों का कुछ ज्ञान प्राप्त होगा।

हमारी रक्षा के लिए श्री परम पूज्य महाराज जी इस भावी संकट को विचारते हुए हमें एक दुःखनिवारिणी प्रार्थना लिखवा गये हैं जिसको हम यहां आप सब के कल्याणार्थ छाप रहे हैं। हमारा सब पाठकों से नम्र निवेदन है कि वे इस दुःखनिवारिणी सुखप्रद और कल्याणदायक प्रार्थना को, अगले अंक के निकलने तक ध्यान और विचार पूर्वक अध्ययन और मनन करें और इसे भगवान् के प्रति अर्पण करें। यही इस मास की भक्ति है इसी को प्रेम से पढ़ो, इसी को मनन करो, इसी का जप करो और इसी को हृदय में धारण करो।

भवदीय—

सम्पादक "भक्ति"

॥ ओ३म् ॥

प्रार्थना

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ओं ॥

हे तेज पुंज ज्योति स्वरूप परमात्मन ! ज्ञान और आनन्द के देने वाले ! विजय कराने वाले ! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सबको उत्पन्न करने वाले ! सबका संहार करने वाले ! सबकी रक्षा करने वाले ! सबको प्रेरणा करने वाले ! अनन्त, अपार, आनन्द स्वरूप, ज्ञान स्वरूप परमात्मन् ! हम तुम्हारा ध्यान करते हैं । तुम्हारे गुण हममें प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों । जो तुम हो, सो ही हम हैं और जो हम हैं, सो ही तुम हो । ऐसे ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं । तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करो । हम में तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सब को हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों । भीतर काम, क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों । जिससे आनन्द पूर्वक हम आप को प्राप्त हों । धन्यवाद पूर्वक हमारी आप को अनन्तवार नमस्कार हो । हमारी रक्षा करो, एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो ।

यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे ।
तत्तेजोस्माकं बुद्धिः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

॥ ओ शम् ॥

इस मन्त्र को जो श्रद्धा भक्ति पूर्वक जपेगा उसे अवश्यमेव भगवान के दर्शन होंगे मोक्ष मिलेगी कल्याण होगा, सब पापों का नाश होगा, मनोकामना पूरी होगी, पुत्र के इच्छुक को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, रोगी को निरोगता, विजय चाहने वाले को विजय, प्राप्त होगी । सिद्धि चाहने वाले को सिद्धि, रिद्धि चाहने वाले को रिद्धि, विद्या चाहने वाले को विद्या, भक्ति चाहने वाले को भक्ति प्रेम चाहने वाले को प्रेम, और प्रेम का आश्रय परमात्मा प्राप्त हो जायगा इसमें सन्देह नहीं ।

REGD. No. L. 2077

अपने चारों ओर बाहर भीतर परमात्मा का
चिन्तन करते हुए यह गीत गाओ।

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप ।
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योतिस्वरूप ॥
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप ।
सुखात्मा चिदात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप ॥
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप ।
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप ॥

ओं शम् ओं खं ब्रह्म ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

मुद्रक तथा प्रकाशक भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस" भगवद्भक्ति आश्रम, रामपुरा रेवाड़ी।

॥ ओ३म् ॥

'भक्ति' कार्यालय
श्रीभगवद्भक्ति आश्रम
रेवाड़ी २६-७-३६

श्रीमान् जी

आप को विदित होगा कि श्री परम पूज्य श्री महाराज जी अब साकार रूप से हमारे सामने विद्यमान नहीं हैं। इसलिये उनकी पुण्य स्मृति में हम सेवा रूप से भक्ति का "वियोगाङ्क" प्रकाशित कर रहे हैं। आपको परम पूज्य श्री महाराज जी के पुनीत दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है, और आपने उनके उपदेश व सत्संग का भी लाभ उठाया है।

अब आप से आग्रह पूर्वक नम्र निवेदन है कि आप भी महाराज जी के सम्बन्ध में उनके श्रद्धालु भक्त होते हुये, अपने उच्च भावों, विचारों और आन्तरिक भावनाओं को लेखबद्ध करके भेजने की कृपा करें।

दूसरे पृष्ठ पर छपे हुये विषय संकेत रूप से आपके सामने उपस्थित किये जाते हैं कि आप इन पर प्रकाश डालें। इसके अतिरिक्त आप अपने भावों से तो हमें अनुग्रहीत करें ही गे।

इस अंक के प्रकाशन करने में किसी भी प्रकार की देरी नहीं की जा सकती है, अतः आशा है कि आप अपने आवश्यक कार्यों को गौण समझ कर इस कार्य को पूर्ण करने की कृपा करेंगे।

आप का लेख (गद्य पद्य) हमारे पास ६ अगस्त १९३६ तक पहुंच जाना चाहिये।

भवदीय—

भूमानन्द सम्पादक "भक्ति"

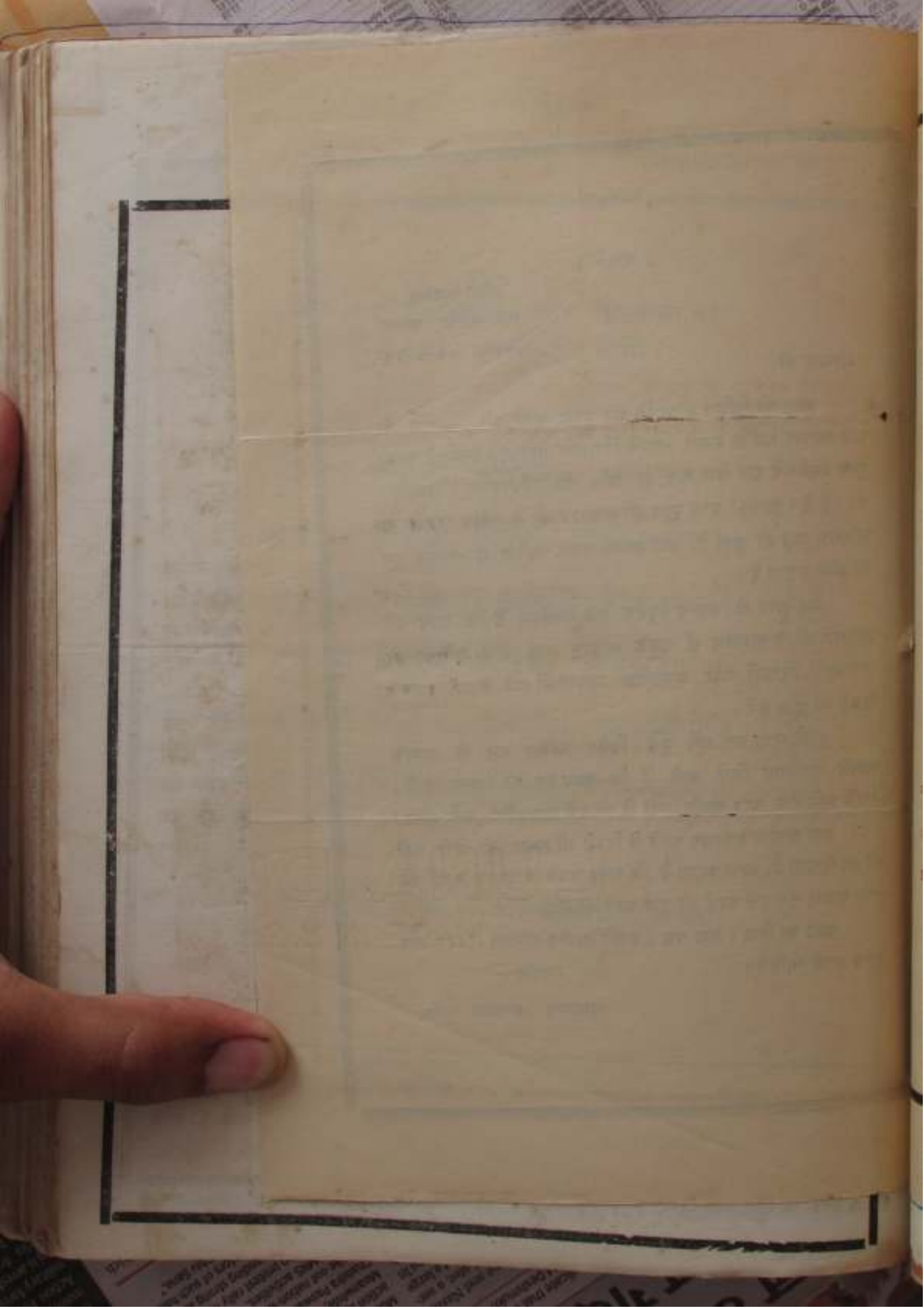

विषय सूची

१—श्री महाराज जी क्या थे ?

२—श्री महराज जी ने हमारे लिये क्या किया ?

३—श्री महाराज जी के प्रति हमारे क्या भाव हैं ?

४—श्री महाराज जी के वियोग की अनुभूति हम किस प्रकार कर रहे हैं ?

५—श्री महाराज जी के जीवन और उपदेशों से हम क्या शिक्षा लेते हैं ?

६—श्री महाराज जी के दिए हुए ज्ञान द्वारा हम अपने लिये तथा मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये कौन कौनसी बातें करने का प्रयत्न कर सकते हैं ?

७—श्री महाराज जी के विचार और उद्देश्य ।

८—श्री महाराज जी और आश्रम ।

९—श्री महाराज जी और वर्तमान युग ।

१०—श्री महाराज जी और "भावी युग" ।

श्री सद्गुरवे नमः

* ओं *

"भक्ति" कार्यालय
श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा
रेवाड़ी १०-८-३६

श्रीमान् जी,

आप की सेवा में २६ जुलाई १९३६ को एक पत्र भेजा था और आप से प्रार्थना की थी कि आप श्री पूज्य महाराज जी के प्रति अपने लेख बद्ध भक्ति भावों से कृतज्ञ करें परन्तु इतनी प्रतीक्षा करने पर भी आप का लेख प्राप्त नहीं हुआ है।

आप श्री महाराज जी के श्रद्धालु भक्त थे इस कारण आप से पुनः सादर प्रार्थना है कि आप श्री पूज्य महाराज जी के प्रति अपने उच्च भावों, विचारो और आन्तरिक भावनाओं को लेख बद्ध करके शीघ्र ही भेजने की कृपा करें जिससे वह १८ तारीख तक अनिवार्यरूप से हमारे पास पहुंच जाय कारण अब 'भक्ति' के प्रकाशन में समय बहुत ही थोड़ा रह गया है आशा है आप लेख भेजने में शीघ्रता करेंगे।

भवदीय—

सम्पादक 'भक्ति'

स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरेषा भक्तकृपा श्रीमहिमः प्रसादात्।